Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

मृणाल पाण्डे के साहित्य में सांस्कृतिक जीवन-दर्शन

Priyanka[1]* Dr. Nirupama Harsh Vardhan[2]

[1] Research Scholar, Ph.D. (Hindi)

[2] Research Director, Department of Humanities and Social Sciences, Faculty of Management and Humanities, Jayoti Vidyapeeth Women's University, Jaipur

सार – ***संस्कृति मानव जाति को सुसंस्कृत सभ्य एवं राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। संस्कृति ही मानव को अन्य प्राणियों से अलग करती है और मानव को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी सिद्ध करती है। मोक्ष, निर्माण एवं भक्ति संस्कृति के ही रूप हैं। भारतीय संस्कृति में पितृ-मातृ भाव और सभ्य आचरण को महत्त्वपूर्ण माना है। भारतीय संस्कृति में समन्वय एवं सामंजस्य की प्रबल भावना है। भारतीय संस्कृति में धार्मिक रीति-रिवाज देवी-देवताओं की पूजा आदि को बहुत महत्त्व दिया गया है।***

----------X----------

भारतीय संस्कृति में अनेक मान्यताएँ हैं जो भारतीय संस्कृति को अन्य संस्कृतियों से अलग करती हैं तथा श्रेष्ठ साबित करती हैं। इसी संस्कृति का भाग्यवाद, पाप-पुण्य निष्काम कर्म एवं संस्कारों का साहित्य में चित्रण हुआ है। धर्म एवं आदर्श में काफी समन्वय होता है और धर्म की परिणति आदर्श के रूप में होती है। परन्तु साहित्यकारों ने संस्कृति के आदर्श से अलग कर यथार्थ के अन्तर्गत भी चित्रित किया है। यही यथार्थवादी चित्रण साहित्य में सांस्कृतिक यथार्थ कहलाता है। अतः साहित्यिक यथार्थवादी दृष्टि से सांस्कृतिक यथार्थ से अभिप्राय है- अलग-अलग कालक्रमों में चिंतन संस्कृति एवं लोकाचरण में परिवर्तन तथा मानसिक तनाव एवं अलगाव के संधि स्थलों का अध्ययन करना।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा संस्कृति को सामाजिक प्रथा का पर्याय मानते हुए लिखते हैं, "संस्कृति शब्द सामाजिक प्रथा का पर्याय है।"[1]

डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त के अनुसार, ''सभ्यता की तरह संस्कृति को भी सुनिश्चित अर्थ नहीं मिल पाया है, फिर भी सभ्यता एवं संस्कृति की सीमा एवं क्षेत्र निश्चित कर दिए गए हैं। सभ्यता का संबंध मनुष्य के बाह्याचार से है और संस्कृति का अर्थ मनुष्य की मानसिकता से है।"[2]

आज के इस युग में हमारी सांस्कृतिक धरोहर नष्ट हो रही है। मनुष्य के सामने खड़ी अनेक समस्याओं ने भातीय संस्कृति को छिन्न-भिन्न कर दिया है। युवा पीढ़ी का युवक अपने सांस्कृतिक दायित्व के प्रति बिल्कुल ही उदासीन है, वह पुरानी मान्यताओं को छोड़कर नई परम्पराएँ स्थापित करने की ओर अग्रसर दिखाई देता है। युवा पीढ़ी की परम्परागत संस्कृति के प्रति कोई आस्था नहीं है। वह स्वतंत्र वातावरण में पैदा हुआ है और स्वतंत्र ही रहना चाहता है, परन्तु विडम्बना यह है कि पुरानी मान्यताएँ टूट रही है और नई मान्यताएँ स्थापित नहीं हो पा रही है। आज विभिन्न प्रकार के भटकावों के परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी का काम डोल रहा है और वह दुविधाग्रस्त मानसिकता की शिकार हो रही है।

मृणाल पांडे जी का साहित्य सांस्कृतिक भावना से ओत-प्रोत है। मृणाल पांडे जी ने संस्कृति का विस्तृत वर्णन किया है उनके अनुसार हमारा समाज पाश्चात्य संस्कृति के बहाव में बहकर विनाश की तरफ जा रहा है। विदेशी संस्कृति को हम श्रेष्ठ मानकर उसका अनुसरण कर रहे हैं जो बिल्कुल गलत है। भारतीय संस्कृति की अपनी शान है, अपनी अलग पहचान है। मृणाल पांडे जी ने अपने साहित्य में संस्कृति को पूर्ण रूप से उकेरा है।

विदेशी संस्कृति का अवमूल्यांकन: विदेशी संस्कृति का प्रभाव भारतीय संस्कृति पर बहुत अधिक पड़ा है। विदेशी रहन-सहन, खान-पान, शिक्षा-दीक्षा तथा विदेशी तौर तरीकों ने भारतीय संस्कृति को बहुत अधिक प्रभावित किया है। आज विदेशी संस्कृति भारतीय संस्कृति के ऊपर पूरी तरह से छाई है। धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलने वालों का समाज में रौब तथा

www.ignited.in

रुतबा माना जाता है। अपने बच्चों को ऊँचे कान्वैंट स्कूलों में पढ़ाना गर्व की बात समझते हैं।

मृणाल पांडे जी के साहित्य में भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति की छाप मिलती है। पाश्चात्य संस्कृति बड़ी तीव्र वेग से हम अपनाते जा रहे हैं। दरम्यान कहानी-संग्रह में वर्णन मिलता है- "विजया ने सटके से सिर उठाया। यही वही पालित है, जो हर सिगरेट जलाने से पूर्व, अदा से झुककर पूछता है, में आई?"

पालित ने हॉर्न बजाया तो बच्चा कूदा.... एक छलांग.... दो छलांग फिर अंधेरे में लोप..... पालित ने कार फिर स्टार्ट की। विजया कुछ चैंकी। उमी शायद उससे पूछ रही थी- डू यू स्मोक? 'नहीं'। गुड गर्ल कभी मत सीखना एक बार सीख लो तो छूटना मुश्किल है। उमी ने खिड़की के बाहर राख झाड़ दी। विजया को औरतों का स्मोक करते देख बड़ी अस्वरिस्त का अनुभव होता है। छुटपन में एक बार आया की फेंकी उठाकर पापा के पास ले गई थी।"[3]

खान-पान में भी विदेशीपन आ गया है। वरम्यान कहानी में खाने का वर्णन इस प्रकार मिलता है- दूसरे कमरे में कोने में टेबल पर खाना लगा था।

छुरी-कांटा नहीं है, विजू लिंक योर हैंडस एण्ड पिक द ईटस। जंगल में जंगल का कानून। डॉली ने उसे प्लेट थमा दी। मेरे मन से थोड़ी सी सब्जी और एक पूरी उठा ली।

अरे यह क्या तुम कब से वेजीटेरियन हो गयी? मुर्गे की टांग चबाता नसीम उसके कंधे के ऊपर से झांक रहा था।

उमी नफासत से एक आलू कुतर रही थी- डायटिंग ही करना हो, विजू तो हमारी उम्र से करना... हम मक्खन छू भी दे, तो वजन बढ़ जाता है। तुम अभी कम उम्र हो।[4]

उमी ने सिगरेट का टोटा फेंक दिया- डियर मी। देखो कॉफ़ी की याद ही नहीं ही। बगैर कॉफ़ी से तो मेरा जहन सोचा ही रहता है। अब?

श्योर! श्योर! डाली ने पत्र फड़फड़ाए- "कह देवा, भाई जरूरत आएंगे।" नसीम का यह तीसरा गिलास था। उसने पहले डॉली के मुँह से सटा दिया- 'पियो'।[5]

एक स्त्री का विदागित में भी पाश्चात्य संस्कृति की झलक मिलती है- घोल धप्पेबाजी में वे लड़कों-सी बीस ही पड़ती थी और लड़कों के सामने अपने अन्तवस्त्र संभालने या गला, पीठ वगैरह खुजाने में उन्हें कोर संकोच-वंकोच नहीं होता था। बड़े हक भरे भाव से वे लड़कों की जेबों या झोजलों में हाथ डाल कर गिसरेटें निकाल लेती थी और फिर सिगरेट सुलगा कर कुछ देर तहिल आँखों से क्षितिज को बैठी ताकती रहती थी।[6] 'बीज' कहानी की पंक्तियाँ हैं- संयुक्त राष्ट्र संघ का जापानी अमरीकी खाद्यान्न विशेषज्ञ विली नाकामुरा अपने जर्मन कैमरे से उसकी रंगीन स्लाइड खींचता है। वाशिंगटन जाकर अपने महानगरीय घर में कभी मित्रों को दिखाएगा- देयर वाज दिल, क्वेण्ट लिटिल विलेज इन द हिल्स दैट वी वेण्ट टू.... एंड देयर वाज दिस लिटिल मैन।[7]

इस प्रकार विदेशी वस्तुओं के प्रति भारतीय लोगों की मानसिकता का पता चलता है। विदेशी संस्कृति तथा विदेशी की तारीफों के पुल बाँधना तथा भारतीय वस्तुओं संस्कृति को हेय की दृष्टि से देखना भारतीयों की सभ्यता बन गई है।

एक समय ऐसा था जब पूरे विश्व में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बोलबाला था। भारत का सोने की चिड़िया कह कहा जाता था। अतीत का यह गौरव आज अंधकार के गर्त में गिर गया है। आज के भारतीय सांस्कृतिक परिवेश पर सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला के विचार अवलोकनीय है, "आज हिन्दू जाति के जीवन में जिस तरह की गंदगी भर गई है, उसको देखते सुधारकों का यह कहना अनेक स्थलों पर सत्य है कि समाज की प्राचीन जातियों में से होकर गंदगी नहीं बह सकती। सदियों का कूड़ा उनमें भर गया है और उस समय की वे नालियाँ अब किसी भी काम की नहीं रह गई है। वर्तमान सभ्य संसार का सामाजिक प्रवाह जैसा है हमें भी उस तरह की नई नालियाँ अब किसी भी काम की नहीं रह गई हैं। वर्तमान सभ्य संसार का सामाजिक प्रवाह जैसा है, हमें भी उस तरह की नई-नई नालियाँ काटकर तैयार करनी चाहिए, नहीं तो हम ऊपर देशों का मुकाबला नहीं कर पाएंगे।[8]

भारतीय संस्कृति की अपनी झलक होती है। दिखावा नाम की कोई चीज नहीं होती। देवी की पंक्तियाँ है, "विजया और में एक ही मंजिल पर रहती थी, दोनों के बच्चे एक की उम्र के थे। हम अकसर साथ-साथ अपने बच्चों को नहलाती, खिलाती और अपने भविष्यों का विचार करती। भारतीय पत्नियों की तरह पतियों को दफ्तर के लिए विदा करके हम अपने बच्चों की निगरानी करती, दुनिया जहान की बातें करती, अपने घर परिवारों की बातें।[9] भारतीय संस्कृति में एक लड़की पर हाथ उठाना पाप समझा जाता है। लड़कियाँ कहानी की पक्तियाँ हैं- "बच्चा है, वो कन्या कुमारी ठेरी, आज अष्टमी है देवी का दिन, आज से दिन कन्या कुमारी पर हाथ नहीं उठाना चाहिए। सराय-पाप लगता है। नानी ने होंठ भींचकर लड़कियों को हलवा पूरी परोसना चालू कर दिया है।[10] आततायी कहानी

www.ignited.in

में भी भारतीय खान-पान का वर्णन है- "ज्यादातर लोग खा चुके हैं, कुछ खा रहे हैं, पर इसके बावजूद मेज पर ढेरों खाना बचा पड़ा है, घी से छलछलाता, मसालों से लाल, आचार-पापड़, वड़ियाँ, मुगौड़िया, सब्जियाँ पूरी, कचैरी, पुलाव, खीर-हलवा। यानि जो मांगेंगे, वही मिलेगा। बस सिर्फ अखाद्य नहीं। खाने की चीजों की तालिका जब ताऊजी की मुहर लगवाने भेजी गई थी, तो उन्होंने निगाली से कश लेकर अपनी झागदार आवाज में सापक कहा था कि नरेश की बहू जर्मन हो या कि पफर्मन, इस घर के चैके में अखाद्य ना पका है, न पकेगा। याद नहीं कि उनके बाबा के जमाने में चूल्हे की लकड़ियाँ तक गंगाजली से धोकर शुद्ध की जाती थीं।[11]

निष्कर्ष:

इस प्रकार मृणाल पांडे जी ने अपने साहित्य में जहाँ भारतीय संस्कृति पर पड़ते हुए पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को उकेरा है और बारीकी से भारतीय संस्कृति का भी वर्णन किया है। भारतीय विदेशी संस्कृति के प्रभाव में आकर विनाश की तरफ बढ़ रहे हैं जो बिल्कुल गलत है। हमारी भारतीय संस्कृति की विश्व में अपनी एक पहचान है, छाप है।

संदर्भ

1. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 568
2. डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त, हिन्दी भाषा एवं साहित्य कोश, पृ. 730
3. मृणाल पांडे, दरम्यान (शख्य की ओर), पृ. 43
4. वही, पृ. 46
5. मृणाल पांडे, दरम्यान, पृ. 48
6. वही, एक स्त्री का विदागित, पृ. 61
7. मृणाल पांडे, चार दिन की जवानी तेरी (बीज), पृ. 73
8. ऊषा शर्मा, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी निबंध साहित्य में व्यंग्य, पृ. 79
9. मृणाल पांडे, देवी (शैलपुत्री), पृ. 43
10. वही, चार दिन की जवानी तेरी (लड़कियां), पृ. 19
11. मृणाल पांडे, दरम्यान (आततायी), पृ. 173

Corresponding Author

Priyanka*

Research Scholar, Ph.D. (Hindi)

www.ignited.in